एक आदर्श अध्यापक

आज के समय में एक आदर्श अध्यापक बहुत मुश्किल से मिलता है। वह अपने संस्थान का गौरव होता है। वह अपने विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत होता है। वह अपने विषय का माहिर होता है। उसकी जानकारी गहरी तथा एक दम नई होती है। उसका लक्ष्य अपने विद्यार्थियों तक नवीन जानकारी पहुँचाना होता है। शिक्षण उसके लिए केवल जीवनयापन करने की चीज़ नहीं होता। यह उसके जीवन का एक मिशन होता है। इसी कारण सभी उसकी इज्जत करते हैं।

एक आदर्श अध्यापक हमेशा अच्छा बोलता है। वह जो उपदेश देता है उस पर स्वयं भी अमल करता है। वह अपने विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करता है तथा उन्हें आदर्श नागरिक में परिवर्तित करता है। वह सादा जीवन तथा ऊँची सोच में विश्वास करता है। वह बच्चों को शारीरिक सजाएँ देने के विरुद्ध होता है। वह प्यार तथा दया से अपने विद्यार्थियों का दिल जीत लेता है।

आदर्श अध्यापक अपने कर्त्तव्य के प्रति सच्ची निष्ठा रखता है। वह सोचता है कि वह राष्ट्र निर्माता है। देश का भविष्य उस पर निर्भर करता है। वह केवल किताबी ज्ञान ही नहीं देता। वह उन्हें दिलो-दिमाग से पोषित करता है। वह उनमें प्रतिभाओं को भरता है जो कि उन्हें अपने देश के प्रति कर्त्तव्यों को पूर्ण करने में सहायता करती हैं।

एक आदर्श अध्यापक मौलिक सिद्धांतों का मालिक होता है। वह अपने लिए हमेशा ऊँचे उद्देश्य रखता है। वह अपनी नीतियों से कभी समझौता नहीं करता। वह अपने देश से प्रेम करता है तथा अपने सभ्याचार तथा परंपराओं से भी समझौता नहीं करता। वह अपनी बात का पक्का होता है। वह अपने काम के प्रति अनुशासित तथा नियमित होता है। वह एक दर्शन-शास्त्रीय अध्यापक जैसे कि राधा कृष्णन की तरह होता है। भारत को अच्छे भविष्य के लिए आदर्श अध्यापकों की आवश्यकता है।